गर्भावस्था के समय गौवंश का रखरखाव

डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. अतुल कुमार वर्मा एवं डॉ. मनीष कुमार शुक्ला
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

मादा पशुओं में प्रसव उपरांत उत्पादन इस बात पर निर्भर करता है कि पशु की देखभाल गर्भावस्था के दौरान उचित ढंग से की गई है या नहीं इसलिए गौवंश का प्रसव उपरांत उच्चतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए ६ से ९ महीने के गर्भकाल के दौरान भी उचित आहार, आवास प्रबंधन एवं अन्य बातों का पूर्णतः ध्यान रखना चाहिए।

आवास एवं रखरखाव

ग्याभिन गौवंश को झुण्ड में खुला ना रखकर अकेला अलग रखना चाहिए ताकि उसका उचित प्रबंधन किया जा सके एवं दूसरे पशुओं से चोट के खतरे से भी बचाया जा सके।
जिस जगह पर गौवंश को बांधा गया है वहा पर मल मूत्र के निकास की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वहा नमी ना रहे ।
आवास की सफाई निरंतर होनी चाहिए ।
आवास हवादार तथा बड़ा होना चहिये ताकि पशु टहलकर हल्का व्यायाम कर सकें ।
गर्मी के मौसम में पंखा होना चाहिए तथा आस पास पेड़ पौधे लगा देने चाहिए ।
ज्यादा गर्मी होने पर स्प्रिंकलर या कूलर भी लगाया जा सकता है ।
सर्दियों में ठंडी हवा से बचाना चाहिए तथा खुले स्थानों को ढक देना चाहिए ।
फर्श ज्यादा फिसलन वाला नहीं होना चाहिए तथा फर्श पर मुलायम चीजों जैसेकि पुआल बिछा देना चाहिए जिसे निरंतर बदलते रहना चाहिए ।

पशु पोषण प्रबंधन

गर्भावस्था के दौरान सम्पूर्ण पोषण देना अत्यंत आवश्यक है ।
यदि आहार में कोई बदलाव करना है तो धीरे धीरे किया जाना चाहिए ।
आहार में हरे चारे को जरूर सम्मिलित किया जाना चाहिए ।
प्रत्येक गौवंश के लिए ५० से ७० लीटर साफ ताजा पानी उपलब्ध होना चाहिए ।
ग्याभिन गौवंश को प्रतिदिन ३०- ३५ किलो हरा चारा ५-६ किलो सूखा चारा एवं ३-४ किलो सम्पूर्ण संतुलित राशन दिया जाना चाहिए ।
प्रत्येक गौवंश को प्रतिदिन ५० ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दिया जाना चाहिए ।
अंतिम माह के दौरान राशन के साथ साथ १ से १.५ किलो खली भी दी जानी चाहिए ।

अन्य प्रबंधन एवं रखरखाव

अंतःपरजीवी तथा बाह्य परजीवीओं के निवारण के लिये पशु चिकित्सक का परामर्श लेना चाहिए ।
प्रसव का समय नजदीक आने पर दिन में ४ से ५ बार तथा रात को भी प्रसव के लक्षणों की यथासंभव निगरानी रखनी चाहिए तथा कुछ भी समस्या होने पर पशु चिकित्सक की सहायता ली जा सके ।